

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उं.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकेण्ड्री परीक्षा 10+2



1. विषय कोड 6110 परीक्षा का विषय गृह प्रबंध
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 2/3/09

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्रमांक 112217

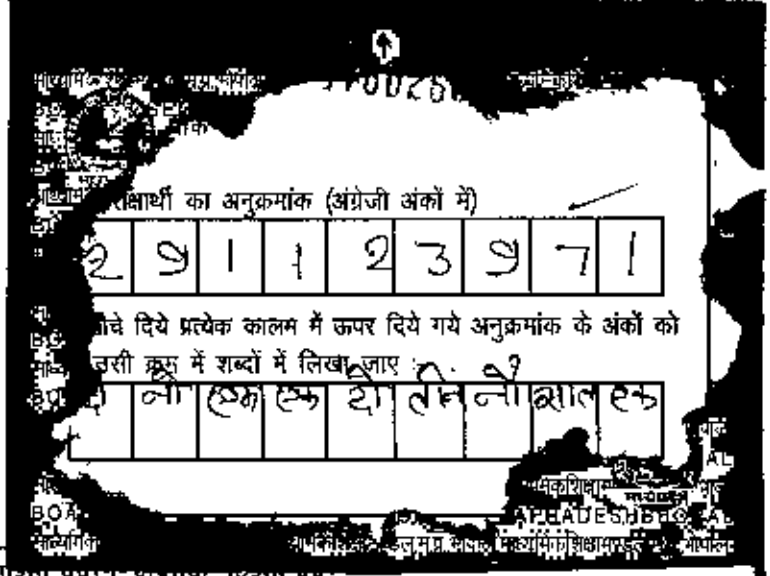
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें कोड सेट U-2053

स्टीकर तौर के निशान से मिलाकर लगायें

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में ५ अंकों में ५
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 07 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

[Signature]

नाम श्री गणेश भाशी पद सहायक

पता/संस्था एच/अरुणा भा-1/2/10

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

[Signature]
हस्ताक्षर-केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चम्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान हैं एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

[Signature]

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

9760304

दिनांक

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरे उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग

कुल अंक



Q-1

सही जोड़ी -

- (अ) पीविटिया - यकृत
- (ब) समय वचन - कपड़े धोने की मशीन
- (स) भोजन संरक्षण - नमक तैल
- (द) क्वारिसोसक - प्रोटीन
- (इ) टैपवर्म - परजीवी

B
S
E
M
P

Q-2

हाँ या नहीं

- (अ) आयोडीन की कमी से हनीमिया होता है (नहीं)
- (ब) रेफ्रिजरेटर भोजन संरक्षण की धरतू विधि है (हाँ)
- (स) एमिलीन नीला कीलकार डाई है (हाँ)
- (द) फल प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं (नहीं)
- (इ) गृहणी की उपभोग्य शिक्षण डा बाल आवश्यक है (हाँ)

Q-3

विप्लव स्थानों की पूर्ति

पृष्ठ सं:



E
S
I
M
I

(अ) मापका, सेलरा विटामिन C

के मच्छे करीव हैं।

(ब) निजीकरण का लप 0°F

X

से 30°F होल हैं।

(क) एक ग्राम प्रोटीन से 4 कैलोरी

कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती हैं।

(द) कपडे को कसा करने के लिये

कलफ

देते हैं।

(इ) जिरीफ्रॉलमिया विटामिन A

की कमी से होला हैं।

3024

एक वाक्य में उल्लेख -

30=4)

कार्य सरलीकरण →

डिप्टी



कार्य को करने के लिये आवश्यक
 समय एवं शक्ति की निरन्तर
 उपलब्धता के कारण कम किया जा
 सकता है। कार्य का सरलीकरण
 उद्देश्य है।
निम्न डीर सिद्धि अनुसार →

स्वयं से कार्य सरल, आसान और
 शीघ्रता से कार्य करने की विधि को
 श्रवीणता कार्य का सरलीकरण है।

B
S
F
M

उदा० (i)

दूध शीत संग्राहक से तापक्रम
 32°F से 40°F तक होता है।

उदा० (ii)

स्नानपान करने वाली मात्रा को प्रतिदिन
 700 कैलरी की आवश्यकता होती है।

उदा० (iii)

उपभोग →

किसी पुरुष को
 रक्तीयक उपयोग करने वाला था
 श्रुतक देकर सेवा प्राप्त करने वाला।

6



उपभोक्ता कहलाता है।

Q. 4)

एकल परिवार →

एकल परिवार वह

परिवार है जो पति - पत्नी तथा उनकी संतानों के बीच होता है।

B
S
E
M
P

Q. 5

उपभोक्ता की समस्याएँ →

उपभोक्तों

की समस्याएँ निम्न हैं -

(1)

बाजार की स्थिति पर निर्भर →

बाजार में

जो वस्तु उपलब्ध होती है वही खरीदनी पड़ती है।

(2)

वस्तु का गुण →

वस्तु के

गुणों का निरीक्षण करना हर उपभोक्ता के लिये जरूरी नहीं होता है। अधिक मिनाक्ट वाली वस्तुओं की पहचान करना अधिक

7

यो

कुल अंक



B
S
E
M
P

होना है

(3)

चुनाव समस्या →

हर दुकान पर एक ही वस्तु ही कई किस्मों होने से चुनाव करने में अधिक श्रम लगता है।

(4)

झूठे विज्ञापन →

आमक सूचनाओं में झूठे विज्ञापन तथा उपहार के लालच में आकर असल वस्तु का चयन कर लेते हैं।

(5)

अनावश्यक वस्तु की खरीदारी →

बाजार में जाने से पूर्व खरीदी जाने वाली वस्तुओं की सूची तैयार न करने पर गलत वस्तु को ख़रीद कर लिया जाता है।

30=6

समय बचाने के सिद्धान्त →

समय बचाने के सिद्धान्त निम्न हैं -
क) प्रत्येक व्यक्ति को समय का सदुपयोग करना चाहिये- व्यर्थों में



पृष्ठ सं. अंक



B
S
E
M
P

- नकल हुआ समय कभी भी वापिस नहीं आता है।
- (1) दैनिक कार्यों में करने में दक्षता लयी जाये जिससे कार्य जल्दी होना समय एवं शक्ति की बचत होगी।
- (2) कम महत्व के कार्यों को बाद में किया जाये।
- (3) कार्य विनाश एवं अवकाश की समस्याओं में संतुलन बनाये रखवना है।
- (4) वस्तुओं का चयन करते समय कार्यों की योजना बनाने समय समय की बचत का ध्यान रखवना चाहिये।
- (5) वस्तुओं के कम पर मूल्य की सुपेक्षा समय की बचत का ध्यान रखवना चाहिये।

Q.7

श्रीजन संरक्षण की वीत्स-कन्द विधि →

श्रीजन संरक्षण की वीत्स-कन्द विधि इस प्रकार है -



B
S
E
M
P

(5) शककर की चारुनी →

शककर की ^{शुद्ध} चारुनी बनाने हैं।

(6) फलों की बीतलों में रखना →

अवस्था में ही फलों की ^{गर्म} बीतलों में रखना चाहिए।

(7) शील बन्द करना →

फल रखने के बाद तथा चारुनी तुरन्त चढाने के बाद शील बन्द कर देना चाहिए।

(8) लेबिलिंग →

बीतल में रखी हुई वस्तु का नाम विवरण संकेत करने वाले लेबिल चिपकाने को लेबिलिंग कहते हैं।

बीतलों में रखी हुई वस्तु का नाम, वजन, मूल्य, पैकिंग कर्ता का नाम, पैकिंग करने की तारीख डेड मार्क संकेत

रखना है।



30-8

शुष्क धुलाई का महत्व →

शुष्क

धुलाई का महत्व तो बहुत बड़ा है जो इस प्रकार है।

(1) साधारण पानी से कपड़ों की धुलाई करते हैं तो उनके रवशव होने के डर रहता है लेकिन शुष्क धुलाई करने से कपड़े रवशव नहीं होते हैं।

(2) शुष्क धुलाई से कपड़ों का रंग रवशव नहीं होता है।

(3) शुष्क धुलाई से कपड़ों की आकृति में कोई परिवर्तन नहीं आता है।

(4) शुष्क धुलाई से कपड़ों की सुन्दरता रवशव नहीं होती है।

(5) शुष्क धुलाई से कपड़ों का सौन्दर्य बना रहता है।

(6) शुष्क धुलाई करने से कपड़ों पर जो सितारे मीठी लगे रहते हैं वह निकलते नहीं हैं।

(7) शुष्क धुलाई करने से कपड़े अधिक दिनों तक चतते हैं।

B
S
E
M
P



30-10

स्वस्थ रहने के लिये महिला
 को पोषण शिक्षा का ज्ञान होना
 अत्यन्त आवश्यक है। कुपोषण
 भारतीय लोगों को नहीं है।
 बल्कि पूरे विश्व की समस्या
 बन चुकी है। महिला को
 पोषण शिक्षा की आवश्यकता
 होना जरूरी है। इसलिये
 कहते हैं कि अगर महिला
 को पोषण शिक्षा का ज्ञान
 होता है तो वह स्वयं तो
 सुरक्षित रहती है तथा अपने साथ
 - साथ परिवार के अन्य
 सदस्यों को स्वस्थ रखती है।
 पोषण शिक्षा के
 माध्यम से हम लोगों को
 आयु, लिंग, जलवायु तथा
 आवश्यकता के अनुसार विन्न
 विन्न दिया जाता है।

अतः स्वस्थ
 रहने के लिये पोषण शिक्षा का
 ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।



B
S
E
M
P

3-11

शयफाड फैलता है →

शयफाड नामक जीवाणु से फैलता है।
शयफाड के कारण →

शयफाड दो रूपों में फैलता है।

- (1) प्रत्यक्ष रूप में
- (2) अप्रत्यक्ष रूप में
- (3) प्रत्यक्ष रूप में →

रोगी के मल मूत्र आदि के पानी को छूने के बाद अच्छी प्रकार से हाथ नहीं धोए हैं तो शयफाड हो जाता है।

(2) अप्रत्यक्ष →

शयफाड दो रूपांतरों में फैलता है।
शयफाड के लक्षण →

(1) दो तीन दिनों तक लगातार बुखार बना रहता है।
(2) इसमें बुखार पूरी तरह से उतरता नहीं है।

(3) शयफाड में प्रायः हल्का ज्वर रहता है।

(4) शयफाड में दिन-चढ़ने के साथ ही साथ बुखार बढ़ता ही जाता है।



पृष्ठ संख्या का योग



B
S

M
P

(5) बुधवार के साथ में रवौंसी
भी मारी है।

(6) अन्तिम दिनों में बुधवार 103°F
से 105°F तक पहुँच जाता है।

(7) टायफाइड में जीभ के मध्य
में सफेदी आ जाती है।

(8) जीभ के किनारों पर लालिमा
उत्पन्न हो जाती है।

(9) टायफाइड का जीवाणु दूध
माँत पर आक्रमण करता है।
जिससे माँत में घाव हो
जाता है।

30-12

संयुक्त व एकल परिवार में
बिम्ब बनता है -

(1)	संयुक्त परिवार	एकल परिवार
	संयुक्त परिवार में माता-पिता उनके बच्चे, दादा दादी, चाचा चाची रहते हैं।	एकल परिवार में पति-पत्नी तथा उनकी संतानों से निर्मित होता है।

(2) संयुक्त परिवार (2) एकल परिवार





बड़ा होता है।

ए छोटा होता है।

(3)

संयुक्त परिवार में
हर व्यक्ति को
स्वतन्त्रता प्राप्त
नहीं होती है।

(3) एकल परिवार में
हर व्यक्ति को
स्वतन्त्रता होती है।

(4)

संयुक्त परिवार में
व्यक्तियों को
उचित मार्गदर्शन
मिल जाता है।

(4) एकल परिवार में
उनके साथ बुजुर्ग
न होने के कारण
उन्हें उचित मार्ग
दर्शन नहीं मिल
पाता है।

(5)

संयुक्त परिवार में
विशयों की दयनीय
स्थिति होती है।

(5) एकल परिवार में
विशयों की दयनीय
स्थिति नहीं होती है।

(6)

संयुक्त परिवार में
गोपनीय स्थल का
अभाव होता है।

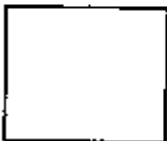
(6) एकल परिवार में
स्थान का अभाव
नहीं होता है।

(7)

संयुक्त परिवार में
सभी लोग मिल
जुतकर कार्य
करते हैं।

(7) एकल परिवार में
परि-पत्नी को ही
हर जिम्मेदारी का
वहन करना
पड़ता है।

B
S
E
M
P





(8)

बड़े-बूढ़े उनके साथ होने के कारण परि-पत्नी में तनाव नहीं होता है।

(9)

एकल परिवार में बड़े-बूढ़े उनके साथ न होने के कारण परि-पत्नी में तनाव होता है।

30=13

मादा आयुष्म को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं—

(A)

उम्र →

मादा आयुष्म

उम्र से बहुत प्रभावित होता है। बच्चों को उनके माता की तुलना में प्रेङ्ग व्यवहारों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक तत्वों की आवश्यकता होती है। बाल्य अवस्था तथा वृद्ध अवस्था में शरीर की क्षमताएँ कम हो जाने के कारण अधिक पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

B
S
E
M
P



B
S
E
M
P

(2)

लिंग →

पौषक आवश्यकता
स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की
अधिक होती है। उनके शरीर की
दृष्ट-दृष्ट हो जाने के कारण
निर्माणक तत्व की आवश्यकता होती
है।

(3)

स्वस्थता →

स्वस्थता की
स्थिति में एक स्वस्थ व्यक्ति की
अपेक्षा अधिक पौषक तत्वों की
आवश्यकता होती है। आवश्यकता होती है।
कम ऊर्जा की।

(4)

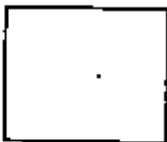
क्रियाशीलता →

एक शारीरिक
अधिक क्रियाशील व्यक्ति को अधिक
पौषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

(5)

जलवायु एवं मौसम →

जलवायु एवं
मौसम से भी सन्तुलित माह
प्रभावित होता है। ठंडी जलवायु के
लोगों को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता
होती है। तथा गर्म देश के जलवायु
के लोगों को कम भोजन की
आवश्यकता होती है।





(6) विशेष शारीरिक आवश्यकता →
 ऑपरेशन के बाद की आवश्यकता, जल जाने के बाद की आवश्यकता, रोगी स्थिति की आवश्यकता, रोग उपचार की आवश्यकता वस्तुनिष्ठ माहौल को प्रभावित करती है।

30-14 भोजन परीक्षते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये -

(1) निम्न स्थान पर भोजन परीक्षण है वह साफ होना चाहिये।

(2) भोजन करने वाले वर्तन साफ होने चाहिये।

(3) भोजन करने वाले वर्तनों को साफ कपड़े से पीछना चाहिये।

(4) भोजन इधर-उधर न फैले इस प्रकार परीक्षण चाहिये।

(5) भोजन परीक्षने वाले का स्वभाव मुटु होना चाहिये।

(6) भोजन 3 परीक्षने के लिये अलग-अलग कपडों

B
S
E
M
P



- (7) का प्रयोग करना चाहिए।
- (7) शौचन एक ही बार में अधिक मात्रा में नहीं परीक्षण चाहिए।
- (8) शौचन परीक्षण की चौकी भोजन या फिर दारू पूर्ण रूप से खवच्छ होनी चाहिए।
- (9) शौचन का समूह पास में ही होना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर सहा दिया जा सके।

I
S
E
M
P

Box 15

वस्त्र परिसंजना →

दार्शनिक द्वारा, मशीन द्वारा बनाये गये वस्त्र प्रारम्भ में अक्षुब्ध तथा आकर्षण हीन होते हैं तथा आकर्षण युक्त बनाने की विधि की वस्त्र परिसंजना कहते हैं।

जैसे— कपड़ों पर प्रेस करना, कलम लगाना, कपड़ों पर से रीट्टे इटाना।
वस्त्र परिसंजना के उद्देश्य →

वस्त्र परिसंजना इस उद्देश्य से की जाती है जिससे कपड़े आकर्षण युक्त हो



B
S

M
P

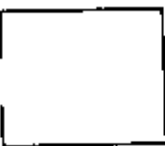
- जाय ।
- (2) वस्त्र परिवर्तन से वस्त्रों की उपयोगिता बढ़ाने के लिये की जाती है ।
- (3) वस्त्र परिवर्तन वस्त्रों में विभिन्नता लाने के लिये की जाती है ।
- (4) वस्त्र परिवर्तन वस्त्रों में विशिष्टता प्रदान करने के लिये की जाती है ।
- (5) वस्त्र परिवर्तन कपड़ों पर कटापन लाने के उद्देश्य से की जाती है ।

300-16

सुपोषण →

सुपोषण वह पोषण है जो शरीर की वृद्धि, विकास तथा स्वस्थ रहने के लिये आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा में उपलब्ध की

संयुक्त भोजन में वे सभी आवश्यक पोषक तत्व पाये जाते हैं जो





B
S
E
M
P

शरीर की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं।

सुपोषण में पोषक तत्वों का पर्याप्त मात्रा में ध्यान रखना चाहिये इस प्रकार है -

(1) सुपोषण में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन उचित मात्रा में उपस्थित होने चाहिये।

(2) सुपोषण से अधिक लाभ लेने के लिये भोजन को अच्छी तरह पकाना चाहिये।

(3) प्रोटीन शरीर की वृद्धि एवं क्षतिपूर्ति देने के लिये आवश्यक होता है।

(4) भोजन बनावदयुक्त होना चाहिये।

(5) भोजन सुशुद्ध होना चाहिये।

(6) गाजर, मूली, शलजम, नींबू आदि को अच्छा खाने से इसमें उपस्थित प्रचुर मात्रा मिल जाती है। इनके पकाने से तत्व नष्ट हो जाते हैं।

(7) अधिक मिर्च मसाले वाला भोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं होता है। इसलिये कम मिर्च मसाले खाने चाहिये।

(8) स्वपोषक भोजन ही संतुलित भोजन

उसके बर्तों का योग



B
S
E
M
P

कहा जा सकता है क्यों कि इसमें लकड़ों की उम्र, जलवायु के आधार पर भोजन भिन्न होता है।

किस 9

नाथलान तन्तु के गुण →

- (1) नाथलान का धागा मजबूत होता है।
- (2) नाथलान का धागा चमकदार होता है।
- (3) नाथलान का धागा रींचा जा सकता है।
- (4) नाथलान के धागे पर कीड़े एवं फफूंद नहीं लगती हैं।
- (5) नमी को नहीं सोखता है।
- (6) रंगों से पिघल जाते हैं।
- (7) धूप से हल्के हो जाते हैं।
- (8) इन्हें सस्लता से रंगा जा सकता है।
- (9) नाथलान पर मैल नहीं जमता।
- (10) नाथलान पर मैल जम जाने पर भी वह शीघ्र ही साफ हो जाता है।



(11)

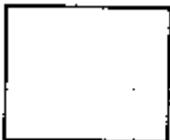
नाथलान के छात्रों को जलाने पर शरव नदी बनती है वहीं पर कठोर गीली बनती है।

(12)

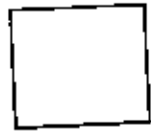
नाथलान का छात्र अधिक बरस बरस कर सकता है।

[Handwritten signature]

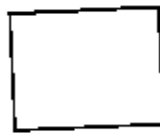
B
S
E
M
P



24



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग